१ੴ वाहेगुरू जी की फतेह ॥

प्रकाशन नं: 299

धर्म, विज्ञान एवं विद्यार्थी

5 रूपये

सिख मिशनरी कालेज (रजि:)
लुधियाना

द्वि-वर्षीय सिख मिशनरी पत्राचार पाठ्क्रम

में दाखला लेकर सिख धर्म की उचित और पूरी जानकारी प्राप्त करें।

1. आप अपने घर बैठकर ही यह कोर्स कर सकते हैं। 2. प्रवेश, प्रत्येक भाई, बहन के लिये हर समय खुला है। 3. द्वि-वर्षीय कोर्स कुल आठ भागों में विभाजित किया हुआ है। 4.प्रत्येक तिमाही में शब्दों की व्याख्या, गुरु इतिहास, साखियां, सिख फिलासफी और लैक्चर इत्यादि कुल सिलेबस विस्तार से वर्णन करके बताया जाता है। 5. दो वर्ष का प्रवेश शुल्क 10 रुपये है। 6. प्रत्येक तिमाही में पुस्तक व्यय 70 रुपये है। 7. प्रत्येक तिमाही में Objective Type प्रश्न हल करने के लिये भेजा जाता है। जिसको आप घर बैठे ही हल करके भेज सकते हैं। जिसको बाद में चैक करके भेज दिया जाता है। 8. द्वि-वर्षीय सिख मिशनरी कोर्स उत्तीर्ण करने पर विद्यार्थियों को सर्टिफिकेट दिये जायेंगे। 9. प्रासपैक्टस (फार्म, सिलेबस, नियम आदि) 7 रुपये का मनीआर्डर या डाक टिकट भेज कर निम्नलिखित पते से मँगवायें।

फ्री साहित्य फंड में अपना हिस्सा डालें

सिख मिशनरी कालज (रजि.) लुधियाना ने हर सिख घर में फ्री धार्मिक साहित्य भेजने की कोशिश की है। हर महीने 60000 की सँख्या में गुरबाणी, सिख इतिहास और सिख रहित मर्यादा के किसी विषय पर साहित्य छपवा कर बाँटा जा रहा है। धर्म प्रचार की यह महान सेवा में हिस्सा डालने की विनती की जाती है। प्रचार हेतु बाँटने वाले 100 रुपये प्रति सैंकड़ा कालेज से मँगवायें।

गुरबाणी, सिख इतिहास और सिख रहित मर्यादा सम्बन्धी खोज भरपूर लेखों के साथ, निरोल गुरमति विचारधारा को प्रचारने वाला मैगज़ीन *(पंजाबी, हिन्दी में अलग-अलग छपने वाला)* **सिख मिशनरी कालज का मासिक पत्र**

सिख फुलवाड़ी

(SIKH PHULWARI) एक कापी : 8 रुपये

सालाना चन्दा		*लाईफ मैंबरशिप*	
देश	60 रुपये	देश	600 रुपये
विदेश	600 रुपये	विदेश	6000 रुपये

सभी प्रकार के शुल्क भेजने का पता

SIKH MISSIONARY COLLEGE (REGD.)

1051/14, Field Ganj, Ludhiana - 141 008. Phone : 0161-2663452
Delhi Sub-office: C-135, Mansarover Garden, New Delhi - 110015 Ph.:011-25413986
Jalandhar Office: Kanwar Satnam Singh Charitabe Complex, Model House Road, Basti Sheikh, Jalandhar - 144 002. Ph. : 0181-2430547
Jammu Sub Office : 36, Gurudwara Singh Sabha Complex, Sector-2, Guru Nanak Nagar, Jammu. Ph. : 0191-2439489

Website : www.sikhmissionarycollege.net
E-mail : smcludh@satyam.net.in

July 2003 2000 Copies

१ਓ वाहिगुरु जी की फतहि ॥

प्रकाशन नं:
299

धर्म, विज्ञान एवं विद्यार्थी

प्रकाशक

सिख मिशनरी कॉलेज (रजि:)

लुधियाना

धर्म, विज्ञान एवं विद्यार्थी

प्राचीन काल से ही मनुष्य किसी न किसी धर्म में आस्था रखता चला आ रहा है। ऐसी अवधारणा है कि धर्म के बगैर मनुष्य अपनी रचना के मुख्य उद्देश्य को नहीं जान सकता। यह सत्य है कि हमारे समाज में धर्म का एक खास महत्व रहा है। आज के वैज्ञानिक युग में भी यह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की सामर्थय रखता है।

यह तो हम जानते ही हैं कि विज्ञान एवं टैक्नोलॉजी मानवीय जीवन की भौतिक अवस्थाओं, वातावरण एवं आर्थिक उन्नति में बड़ा योगदान डालते है, परन्तु धर्म एवं नैतिक विद्या, मानवीय व्यक्तितत्व एवं आत्मिक विकास में बड़े कारगर सिद्ध होते हैं।

पदार्थक बाहुल्य व सुख सुविधाओं से परिपूर्ण वैज्ञानिक युग में मनुष्य सुखी व आनन्दमयी जीवन जी सकता है, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि उसे मन की शान्ति भी प्राप्त हो। अमरीका, कैनेडा व यूरोपीय देशों के बहुत ही खुशहाल व समृद्ध समाज में भी यह महसूस किया जाने लगा है कि धन-दौलत एवं शक्ति (Power) की प्राप्ति ही सभी कुछ नहीं है, असल उन्नति या प्राप्ति तो अर्न्तमन की है जो आत्मिक सन्तुष्टि व परिपूर्णता की भावना के रूप में प्रगट होती है।

इसमें कोई शक नहीं कि आज का युग वैज्ञानिक युग है। वैज्ञानिक खोजों के कारण ही मानवीय सभ्यता ने विशाल उन्नति की है। भुखमरी व बीमारियों को जड़ से खत्म करने के लिए विज्ञान मानवीय प्रयत्नों का एक अति जरूरतमन्द औजार है। वैज्ञानिक चेतना ने हमें वहमों, भ्रमों व अन्ध विश्वास की मार से बचाया है। विज्ञान एवं टैक्नोलॉजी की मदद से आज मनुष्य प्रकृति के रहस्यों को जानने में समर्थ हो चुका है।

तो क्या टैक्नोलॉजी बाहुल्य वाले आज के इस समाज को एक आर्दशक समाज माना जा सकता है ? शायद नहीं। आज हमारे समाज में बहुत ही तनाव पूर्ण स्थिति बनी हुई है। मानवीय जीवन में आत्मिक विकास की गिरती हुई दशा व निम्न स्तर की भावनाओं का वातावरण चारों तरफ फैला हुआ है। वैज्ञानिक सफलताओं व उपलब्धियों ने अपने अनेक लाभों के साथ-साथ ही, मानवीय सभ्यता को सम्पूर्ण विनाश व मनुष्य की हस्ती को मिटाने के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। समाज में पदार्थक बाहुल्य प्राप्ति की तीव्र इच्छा, विभिन्न प्रकार के नशों की प्राप्ति व सेवन करने का चलन एवं सदाचारक गुणों में आने वाली गिरावट तो बहुत बुरी है जो समाज में अनेकों समस्याओं को हमेशा जन्म दे रही है। ठीक इसी प्रकार वैज्ञानिक खोजों से जन्में रसायनिक हथियार, न्यूक्लियर हथियार,(विशेषकर एटम बम्ब, हाइड्रोजन बम्ब, परमाणु बम्ब), लेज़र सिस्टम व दूरगामी अस्त्रा, मनुष्य की हस्ती को मिटाने के लिए पैदा किये जा चुके प्राणघातक हथियारों की लिस्ट का एक सूक्ष्म अंश ही तो है। तो सन 1945 में जापान के शहरों हिरोशिमा व नागासाकी को, व द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान हुए न्यूक्लियर दुखांत (जिसमें कि लाखों लोग मारे गये एवं लाखों ही ला-इलाज बीमारियों का शिकार हुए आज भी कष्ट भोग रहे हैं) को कैसे भुलाया जा सकता है ? सन 1991 के दौरान खाड़ी युद्ध मे प्रयोग किये गये हथियारों व विनाशकारी नीतियों के कारण जहां पश्चिमी एशिया के देशों के अनेकों मनुष्यों, पशुओं व पक्षियों का गहन नुकसान हुआ वहां पृथ्वी ग्रह के प्राकृतिक सन्तुलन को भी बड़ी ठेस पहुँची। क्या ऐसी विनाशकारी घटनाओं का कोई हल है?

जी हाँ। ऐसे हालातों में धर्म की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। धर्म समाज को ऐसी मुसीबतों व समस्याओं से बचाने की क्षमता रखता है। वह मानवीय गुणों को लग रहे घुन को रोकने में मदद करता है। ध ार्म मानवीय जीवन व मानवीय समाज के सर्वकाली- स्थायित्व के लिये आवश्यक मूलभूत सदाचारक गुणों को शक्ति प्रदान करता है। नसली

पक्षपात, आर्थिक शोषण व सामाजिक अन्याय का विरोध करता है।

धर्म विज्ञान की ही भाँति मनुष्य का सेवक है। शर्त सिर्फ एक ही है कि दोनों (धर्म एवं विज्ञान) को मनुष्य की भलाई के लिए ही इस्तेमाल किया जाये। धर्म तो विज्ञान की अनभिज्ञता को भी ठीक करने में मदद करता है, इसका आधार आध्यात्मिक व नैतिक गुण है। प्राणघातक हथियारों के विकास में विज्ञान के निरन्तर बढ़ते प्रकोप को रोकने में धर्म एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

धर्म, व नैतिक विद्या, वैज्ञानिकों में मानवीय सदाचारक गुणों का विकास करने में बड़े मददगार है एवं यह ज्ञान उन्हें समाज के प्रति उनके उत्तरदायित्व का एहसास दिलाता है। धर्म, वैज्ञानिक खोजों व प्राप्तियों के उपभोगों द्वारा एवं उद्योगों द्वारा पैदा किए गए उपभोग की वस्तुओं के ऊपर निगरानी का काम करता है। धर्म, सामाजिक सहनशीलता, आपसी प्रेम, शान्ति व भाईचारे का प्रतीक है। यह नैतिक (Moral) एवं मानवीय कद्रों-कीमतों को प्रोत्साहित करता है।

महान वैज्ञानिकों ने स्वयं विज्ञान की कमियों को महसूस किया है। वह सामाजिक बुराईयों के इलाज के लिए धर्म को एक महत्वपूर्ण शक्ति समझते है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा0 जुलीयन हक्सले का कथन है कि 'किसी न किसी रूप में धर्म एक आवश्यकता ही है।

हमें धर्म के द्वारा सत्य की खोज व आत्मिक विकास की प्रोन्नति को मानना ही पड़ेगा।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि धर्म एवं विज्ञान मानवीय जीवन के दो महत्वपूर्ण पहलू है। मानवीय जीवन के विकास एवं खुशहाली के लिए दोनों का सुमेल आवश्यक है, टकराव नही। दोनो धारणाओं मे कुछ आधारभूत अंतर भी है जैसे कि धर्म प्राकृतिक रहस्यों व घटनाओं के पीछे किसी अलौकिक शक्ति या कर्त्ता-पुरख (परमात्मा) की हस्ती मे विश्वास करता है। इस शक्ति की होंद को

मानते हुए उसके प्रति श्रद्धा को प्रमुखता देता हुआ मानवीय-जीवन के भेद को समझने की कोशिश में तत्पर है। इससे बिल्कुल भिन्न, विज्ञान क्रमवार ज्ञान का नाम है।

यह प्रकृति के रहस्यों को जानने के लिए तर्क, पुष्टियोग अनुभवों एवं सूझ-समझ के ठीक इस्तेमाल को प्रमुखता देता है। यह पदार्थ व उसकी संरचना की छानबीन करता हुआ प्राकृतिक क्रिया-कलापों के पीछे ऊर्जा के भिन्न-भिन्न स्वरुपों के बदलाव का वर्णन करता है। विज्ञान, धार्मिक कट्टरता, पक्षपात, अन्ध-विश्वास व वहमों-भ्रमों को खंत्म करके समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने की योग्यता रखता है।

अपने कुछ मूलभूत अन्तरों के सिवा, धर्म व विज्ञान, दोनों का आशय एक ही है, अर्थात- प्रकृति के रहस्यों को समझ व जानकर मानवीय जीवन को कैसे अच्छे व बेहतर ढंग से जिया जा सके। आओ अब, धर्म व विज्ञान का 'विद्यार्थियों के जीवन में महत्व' के बारे में जानें। अपने विलक्ष्ण गुणों के कारण धर्म व विज्ञान जहाँ एक दूसरे के पूरक होने की योग्यता रखते है वहीं यह दोनो ही विद्यार्थियों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने एवं उन्हें सार्थक मार्गदर्शन करनें के योग्य है जैसे कि निम्नवत् कुछ उदाहरणों से स्पष्ट है-

(1) विद्या प्राप्ति

विद्यार्थी जीवन का मुख्य निशाना है- विद्या प्राप्ति। विज्ञान ने विद्या प्राप्ति के लिए अनेकों सहूलियतें प्रदान की है। प्रिन्टिंग प्रेस की खोज के बाद तो शिक्षा प्रदान करने के तरीकों में क्रान्तिकारी बदलाव आया है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों के पास ज्ञान प्राप्ति के लिए अनेकों सुविधाएं उपलब्ध है। 'भिन्न भिन्न विषयों से सम्बन्धित खोजपूर्ण जानकारी वाली पत्रिकाएं आज आम

उपलब्ध है, अखबार व पत्रिकाएं बच्चों के लिए विशेष रचनाएं छापते है। रेडियो व टी0 वी0 बच्चों के लिए विशेषकर शिक्षाप्रद कार्यक्रम प्रसारित करते ही रहते हैं। आजकल स्कूलों व कॉलेजों में पुस्तकालय सुविधा आमतौर पर उपलब्ध है। आडियो व वीडियो सुविधाओं, कमपैक्ट-डिस्कों व कम्प्यूटरों की आमद ने शिक्षा के आदान-प्रदान सम्बन्धी कार्यो को बड़ा ही सरल व रोमांचकारी बना दिया है। विज्ञान व टैक्नोलॉजी के विकास ने विद्यार्थियों के लिए अनेकों नये कारोबार सम्बन्धी कोर्स उपलब्ध कराये हैं। रोज़गार के नये ढंगों का विकास हुआ है।

आज के विद्यार्थियों के लिए, डाक्टर, इंजीनियर, अध्यापक एवं आफीसर बनने के मौके आमतौर पर उपलब्ध है। आज के विद्यार्थियों को तो शिक्षा प्राप्ति के लिए वह सफल व प्रगतिशील किस्म की सुविधाएं आमतौर पर उपलब्ध हैं जो कभी भूतकाल के राजकुमारों को भी उपलब्ध नहीं होती थीं। यह सब विज्ञान की ही देन है। इस प्रकार विज्ञान हमें विद्या की प्राप्ति व विद्या प्रदान करने के कार्यों में विशेष सहयोगी सिद्ध हुआ है।

आओ अब, विद्या से सम्बन्धित धर्म के विचारों को जानें- गुरू नानक देव जी आसा राग में शिक्षा के प्रति अपने विचार इस प्रकार प्रकट करते हैं:-

विदिया वीचारी, तां परउपकारी।।

(राग आसा, म. १, पृष्ठ ३५६)

विद्या के रूप 'अक्षर ज्ञान' की महत्वपूर्णता को बताते हुए गुरु नानक देव जी जपुजी साहिब बाणी में फुर्माते है:

अखरी नामु, अखरी सालाह।।
अखरी, गिआनु गीत गुण गाह।।
अखरी, लिखणु बोलणु बाणि।।
अखरा सिरि संजोगु वखाणि।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ ४)

भावार्थः प्रभु परमेश्वर का नाम भी अक्षरों के द्वारा ही लिया जा सकता है। उसके गुण-गान भी अक्षरों के द्वारा ही किए जा सकते है। परमात्मा व उसकी बनाई प्रकृति का ज्ञान भी अक्षरों के द्वारा ही विचारा जा सकता है। अक्षरों के द्वारा ही उसके संगीत व गुणों की जानकारी हो सकती है।

ज्ञान प्राप्ति की महत्वपूर्णता को समझते हुए भक्त कबीर जी समय के उचित प्रयोग के बारे में फुर्माते है:

कबीर कालि करंता अबहि करु, अब करता सुइ ताल।।
पाछै कछू न होइगा, जउ सिर परि आवै कालु।।१३८।।

(पृष्ठ १३७१)

भावार्थ - हे कबीर ! जो तूं कल करना चाहता है, वह अभी ही कर ले, नहीं तो कल कल करते हुए जब निश्चित समय (मौत) आ गया तो उस समय, समय बीत जाने के कारण कुछ नहीं हो सकता।

इस प्रकार जो विद्यार्थी पढ़ाई के कार्य को कल (भविष्य) के ऊपर छोड़ देते है। वह विद्यार्थी वक्त बीत जाने के कारण बाद में पछताते है। भक्त कबीर जी के इस श्लोक से हमें नियत समय पर उचित काम करने की शिक्षा लेनी चाहिए। इसी प्रकार गुरबाणी में वर्णन है किः

गिआन विहूणा कथि कथि लूझै।।

(आसा की वार, श्लोक, म: १, पृष्ठ ४६६)

भावार्थ - जब तक मनुष्य ज्ञान से कोरा (खाली) है तब तक वह मुँह से ज्ञान की बातें कर करके अपने आप को ज्ञानवान समझकर स्वयं अपने अर्न्तमन को ही लुभाता है। परन्तु, ज्ञान की प्राप्ति के बाद यदि इन्सान फिर भी विकारों पर काबू न पा सके तो ऐसे पढ़े-लिखे ज्ञानवान मनुष्य के लिए गुरू साहिब जी फुर्माते है :

पढ़िआ मूरखु आखीऐ, जिसु लबु, लोभु, अहंकारा।।

(माझ, म: १, पृष्ठ १४०)

व, यदि मनुष्य ज्ञान हासिल करके भी प्रभु व उसकी सृजना के प्रति प्रेम की भावना न जगा सके, तो ऐसे मनुष्य के लिए गुरू नानक देव जी फुर्माते है :

पढ़ि पढ़ि गडी लदीअहि, पढ़ि पढ़ि भरीअहि साथ।।
पढ़ि पढ़ि बेड़ी पाईऐ, पढ़ि पढ़ि गडीअहि खात।।
पढ़ीअहि जेते बरस बरस, पढ़ीअहि जेते मास।।
पढ़ीऐ जेती आरजा, पढ़ीअहि जेते सास।।
नानक लेखै इक गल, होरु हउमै झखणा झाख।।

(आसा की वार, म: १, पृष्ठ ४६७)

भावार्थ : यदि इतने ग्रन्थ पढ़ लिए जायें, जिनसे कई गाड़ियां भरी जा सकें, जिनके ढेरों के ढेर लगाये जा सकें। यदि इतनी पुस्तकें पढ़ ली जायें जिनसे एक नाव भरी जा सके, कई गडढे भरे जा सकें। यदि पढ़-पढ़ कर सालों के साल गुज़ार दिये जायें, यदि पढ़-पढ़ कर सारी उम्र बिता दी जाये, यदि पढ़-पढ़ कर उम्र के सारे श्वास बिता दिये जायें , तो हे नानक, मनुष्य का नेक चरित्रा नहीं तो सब व्यर्थ है। प्रभु की दरगाह में तो केवल प्रभु प्रेम (सृजनहार व सृजना के प्रति प्रेम या नेक चलन) ही कबूल होता है। इसके अलावा और कोई परिश्रम करना, स्वयं के अहंकार में ही भटकने के समान है।

आप फुरमाते हैं :

लिखि लिखि पढ़िआ।। तेता कढ़िआ ।।

(आसा, म: १, पृष्ठ ४६७)

भावार्थ : जितना कोई मनुष्य (कोई विद्या) लिखनी-पढ़नी जानता है यदि उतना ही उसे अपनी विद्या का अहंकार है तो यह अच्छी बात नहीं। अहंकार तो दीर्घ रोग है। वह सारी विद्या जो अहंकार को जन्म देती है, गुरू साहिबान के विचारानुसार निंदा के योग्य है जो भी (गुरू की कृपा द्वारा) विद्या के सिद्वान्तों को समझता, सोचता व विचारता है, वह सिर्फ इसी संसार में नहीं, अपितु प्रभु की दरगाह में भी सम्मान प्राप्त करता है।

गुर परसादी विदिआ वीचारै, पढ़ि पढ़ि पावै मानु।।

(प्रभाती, म: १, पृ. १३२९)

ऐसी विद्या इस प्रकार की बुद्धि उत्पन्न करती है जो मन को जीतने व प्रभु को प्राप्त करने में सहायक होती है।

इस प्रकार सिख धर्म के रचयिता गुरू नानक देव जी ने मनुष्य को ज्ञान प्राप्ति से उत्पन्न अहंकार से रोका है व उसे सांसारिक विषय-विकारों को रोकने के लिये विद्या प्राप्ति (ज्ञान उपलब्धि) के सुयोग्य व उचित इस्तेमाल के लिए मार्ग दिखाया है।

इस प्रकार विज्ञान व धर्म दोनों ही मिलकर, विद्या (ज्ञान प्राप्ति) के महत्व को समझाते हुए विद्यार्थियों के लिए विद्या प्राप्ति से सम्बन्धित कार्यों के लिए प्रेरणा स्रोत व मददगार सिद्ध होते है, व उन्हें प्राप्त ज्ञान के उचित इस्तेमाल के लिए दिशा निर्देश भी करते हैं।

(2) खेलों का महत्व व शारीरिक अरोग्यता

अंग्रेजी भाषा की एक कहावत है कि 'A SOUND MIND IN A SOUND BODY' भाव एक अरोग्य शरीर में ही एक अरोग्य मन रहता है। अरोग्य शरीर व अरोग्य मन का सुमेल ही विद्यार्थी को अपने जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति की पूर्ति में विशेष सहयोगी सिद्ध होता है।

शारीरिक अरोग्यता के लिए खेलों का बड़ा महत्व है। आज वैज्ञानिक अन्वेषणों से यह सिद्ध हो चुका है कि शारीरिक तंन्दुरुस्ती की प्राप्ति में खेलों व कसरत का विशेष योगदान है। शान्त व सन्तुलित मन विद्यार्थी को ज्ञान प्राप्ति की योग्यता में बढ़ावा करता है। मन की अरोग्यता ही अरोग्य शरीर का कारण व आधार बनते हैं।

शरीर व मन की अरोग्यता के लिए गुरू अर्जुन देव जी इस प्रकार फुर्माते हैं :

करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना, मन तन भए अरोगा।।

(गउड़ी, म: ५, पृ. ६११)

सिर्फ शारीरिक स्वच्छता ही नहीं, मन की स्वच्छता भी ज़रूरी है। शारीरिक स्वच्छता हमें बीमारियों से बचाती है व मन की स्वच्छता हमें बुरे विचारों व विषय-विकारों से बचाती है, तभी तो गुरू अमरदास जी फुरमाते हैं :

जीअहु मैले, बाहरहु निरमल।।
बाहरहु निरमल जीअहु त मैले, तिनी जनमु जूऐ हारिआ।।

(पृ. ९१९)

भावार्थ : बाहर से सुन्दर व स्वच्छ दिखने वाले व्यक्ति यदि मन के अन्दर (अर्न्तमन में) विषय-विकारों से ग्रसित हों तो उन्होंने अपना जीवन इस प्रकार व्यर्थ ही गंवा लिया समझो जैसे जुआरी जुए में धन हार के आता है। एवं आप जी आनंद साहिब की बीसवीं पउड़ी में फुर्माते है :-

जीअहु निरमल, बाहरहु निरमल।।
बाहरहु त निरमल, जीअहु निरमल,
सतिगुर ते करणी कमाणी।।
कूड़ की सोइ पहुचै नाही, मनसा सचि समाणी।।
जनमु रतनु जिनी खटिआ, भले से वणजारे।।
कहै नानकु जिन मंनु निरमलु, सदा रहहि गुर नाले।।२०।।

(रामकली, म: ३, अनंदु, पृ. ९१९)

भावार्थ : जो मनुष्य तन व मन, दोनों पक्षों से ही स्वच्छ व पवित्रा होते है व आचरण-सृजना की वह कमाई (मेहनत) करते है, ज़िसकी सूझ-समझ गुरू से उत्पन्न होती है, वह बाहर से व अन्दर से शुद्ध हो जाते है। सांसारिक विषय-विकार उन्हें छू भी नहीं सकते एवं वह सदैव ही प्रभु रंग में रंगे रहते है। (प्रभु के गुणगान में लीन रहते है) वह मनुष्य, जिन्होंने सच्चा व पवित्रा कर्मो वाला जीवन व्यतीत किया है वह अपना मनुष्य जन्म सफल कर गए है। गुरू नानक देव जी कहते है कि पवित्रा व शुद्ध मन वाले मनुष्य (अन्र्तमन) सदैव ही गुरू के अंग-संग रहते है भाव गुरू के चरणों में लिवलीन रहते है। गुरू नानक देव जी मन की शुद्धता के बारे में इस प्रकार फुर्माते है:-

सूचे एहि न आखीअहि, बहनि जि पिंडा धोइ।।
सूचे सेई नानका, जिन मनि वसिआ सोइ।।२।।

(आसा की वार, म: १, पृ. ४७२)

मन की निर्मलता की महत्वपूर्णता को बताते हुए भक्त कबीर जी इस प्रकार फुर्माते है:

कबीर मनु निरमलु, भइआ, जैसा गंगा नीरु।।
पाछै लागो हरि फिरै, कहत कबीर कबीर।।५५।।

(सलोक, कबीर जी, पृ. १३६७)

भावार्थ : कबीर जी बताते है कि जब मनुष्य का मन विषय विकारों से मुक्त हो, गंगा के निर्मल व स्वच्छ जल की भाँति पवित्रा हो जाता है तब प्रभु तो उसके पीछे-पीछे चलता है, भाव प्रभु स्वयं उस मनुष्य के अन्र्तमन में आकर प्रकट होता है।

दशमेश पिता, गुरू गोबिन्द सिंध जी शारीरिक अरोग्यता एवं सच्ची व पवित्रा अवस्था-प्राप्ति का मार्ग इस प्रकार बताते है:-

अलप अहार, सुलप सी निद्रा, दया छिमा तन प्रीति।।

सील संतोख सदा निरबाहिबो, हवैबो त्रिगुण अतीति।।२।।
काम क्रोध हंकार लोभ हठ, मोह न मन सिउ लयावै।।
तब ही आतम तत को दरसे, परम पुरख कह पावै।।३।।

(शबद पा. १०, रामकली)

आतम उपदेस भेस संजम को, जाप सु अजपा जापै।।
सदा रहै कंचन सी काया, काल ना कबहूं बयापै।।३।।

(शबद पा. १०, रामकली)

आज वैज्ञानिक खोजों ने यह सिद्ध कर दिया है कि विषय-विकारों का मनुष्य की सेहत के ऊपर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है। जैसे कि काम वासना, लिंग रोगों व एड्स जैसी नामुराद बीमारियों की जड़ है। क्रोध, मानसिक तनाव को जन्म देता है। जिसके फल स्वरूप 'ब्लड प्रेशर' में खतरनाक तब्दीलीयां पैदा हो जाती है।

काम क्रोधु काइआ कउ गालै।। *(रामकली, म: ५, पृ. १३२)*

माया या सांसारिक पदार्थ एकत्रा करने का लोभ मानसिक शान्ति को खत्म करता है व अनेकों शारीरिक व मानसिक तनावों को जन्म देता है। अधिक मिठाई खाने का लोभ 'डायबिटीज़' या 'शुगर' की बीमारी पैदा करता है। ठीक उसी प्रकार ही मसालेदार, चटपटे भोजन व नमकीन का आवश्यकता से अधिक उपभोग 'ब्लड प्रेशर' को बढ़ाता है। मोह व अहंकार जैसे 'मनोरोग' भी इसी प्रकार ही मनुष्य के लिए अनेक समस्याओं का कारण बनते हैं। गुरू साहिब तो अहंकार को एक दीर्घ रोग कहते है:-

हउमै दीरघ रोगु है।। *(आसा की वार, म: १, पृ. ४६६)*

विद्वान लोग तो यहाँ तक कहते है कि मन की निर्मलता आत्मा को प्रभु के बहुत करीब ले जाती है। तभी तो बाबा नानक जी फुर्माते है:-

मनि जीतै जगु जीतु।। *(गुरू ग्रन्थ साहिब, पृ. ६)*

मन की निर्मलता की सीमा, उसी प्रकार ही शरीर को भी स्वच्छ

बनाती है। गुरू अर्जुन देव जी फुर्माते हैः-

सो तनु निरमलु, जित उपजै न पापु।। *(गउड़ी, मः ५, पृ. १९८)*

(3) शुभ-कर्म या सद्व्यवहार

जब मक्का के हाजीओं ने बड़े स्वाभिमान के साथ पूछा कि हिन्दु अच्छे है या मुसलमान तो गुरू नानक साहिब ने स्पष्ट कहा था :-अच्छा वही है, जिसके कर्म अच्छे हैं। अच्छाई व उसतति हिन्दु या मुसलमान होने में नहीं, यह तो नेक नीयत व नेक कर्मो का धारणी 'इन्सान' होने में हैः-

पुछनि फोलि किताब नो, हिंदू वडा कि मुसलमानोई।।
बाबा आखे हाजीआ, सुभि अमला बाझहु दोनो रोई।।

इस प्रकार, सिख धर्म में सभी जीवों के लिए नेक कर्म व सच्चे व पवित्रा आचरण के धारणी होने पर बड़ा जोर दिया गया है। जैसे कि निम्नलिखित गुरबाणी के कुछ प्रमाणों से और भी स्पष्ट हो जाता हैः-

सचहु ओरै सभु को, उपरि सचु आचार।।

(सिरीरागु, मः १, पृ. ६२)

कूड़ निखुटे नानका, ओड़कि सचि रही।।

(रामकली, मः १, पृ. ९५३)

साझ करीजै गुणह केरी, छोडि अवगण चलीऐ।।

(सूही, मः १, प्र. ७६६)

गुरू नानक देव जी ने दूसरों का हक मारने, या धोखा देने के बारे में सखती से विरोध स्वरुप कहा हैः-

हकु पराइआ नानका, उसु सूअरु उसु गाइ।।

(माझ, मः १, पृ. १४१)

रोज़ाना व्यवहार में मीठा बोल-बोलने को प्रमुखता देते हुए आप फुर्माते हैं:-

मिठतु नीवी नानका, गुण चंगिआईआ ततु।।

(आसा की वार, म: १, पृ. ४७०)

फीका, रूखा या कड़वी बोलचाल या आपसी बुरे व्यवहार से परहेज़ करना विद्यार्थियों व साधारण मनुष्यों के लिए अति आवश्यक है। सिख धर्म में, इस सम्बन्ध में बहुत ही सरल व स्पष्ट विचार प्रकट किए गये है, जैसे कि

मंदा किसै न आखीऐ, पढ़ि अखरु ऐहो बुझीऐ।।
मूरखै नालि न लुझीऐ।। *(आसा की वार, म: २, पृ. ४७३)*

नानक फिकै बोलिऐ, तनु मनु फिका होइ।।
फिको फिका सदीऐ, फिके फिकी सोइ।।
फिका दरगह सटीऐ, मुहि थुका फिके पाइ।।
फिका मूरखि आखीऐ, पाणा लहै सजाइ।।२।।

(वार आसा, म: २, पृ. ४७३)

भावार्थ :- गुरू नानक देव जी फुर्माते है कि यदि मनुष्य रूखे बचन (कड़वा बोल) बोलता रहे तो उसका तन व मन दोनो रूखे हो जाते है। (भाव मनुष्य के अर्न्तमन से प्रेम अलोप हो जाता है) रूखा बोलने वाला, लोगों में रूखा ही प्रसिद्ध हो जाता है। एवं लोग भी उसे रूखे बचनों से ही याद करते है। रूखा (भाव प्रेम से खाली) मनुष्य (प्रभु की) दरगाह से निकाला जाता है। व उसके मुँह पर थूकें पड़ती है (भाव धिक्कारे पड़ती हैं) (प्रेमहीन) रूखे मनुष्य को मूर्ख कहना चाहिए। प्रेमहीन मनुष्य को जूतों की मार पड़ती है। भाव हर स्थान पर उसकी सदैव बेईज़्ज़ती होती है।

बाबा फरीद जी, हमें रूखे बोल बोलने से सावधान करते हुए इस प्रकार फुर्माते हैं:-

इकु फिका न गालाइ, सभना मै सचा धणी।।
हिआउ न कैही ठाहि, माणक सभ अमोलवे।।१२९।।

(सलोक, फरीद जी, पृ. १३८४)

भाव : एक भी कड़वा बोल मत बोलो, क्योंकि सभी में सत्य प्रभु निवास कर रहा है। किसी का भी दिल मत दुखाओ (क्योंकि) यह सारे जीवन अमूल्य है। शुभ कर्मों से विहीन जीवन के बारे में फरीद जी फुर्माते है:-

फरीदा लोड़ै दाख बिजउरीआं किकरि बीजै जटु।।
हंढै उंन कताइदा पैधा लोड़ै पटु।।

(सलोक, फरीद जी, पृ. १३७९)

भाव : फरीद जी फुर्माते है कि शुभ कर्मो से खाली सुखी जीवन की आशा रखने वाला मनुष्य उस किसान की भांति है जो स्वयं तो किकर बीजता है पर उनसे (बिजौर के क्षेत्रा का छोटा) अंगूर खाना चाहता है।

सारी उम्र तो ऊन कात्ता फिरता है, पर रेशम पहनना चाहता है। इसी प्रकार फरीद जी सज्जन पुरुष के गुणों का वर्णन इस प्रकार करते हैं :-

मति होदी होइ इआणा ।। ताण होदे होइ निताणा ।।
अणहोंदे आप वंडाए ।। को ऐसा भगतु सदाए ।।

भावार्थ : जो मनुष्य अक्ल होते हुए भी अन्जान बने(अक्ल के द्वारा दूसरों पर कोई दबाव न डाले), बल होते हुए भी कमजोरों की भांति जीये(किसी पर जोर जबरदस्ती न करे), जब कुछ भी देने योग्य न हो तब स्वयं (अपना हिस्सा भी) बांट दे। किसी ऐसे मनुष्य को सज्जन पुरुष या (भक्त) कहना चाहिए।

गुरू अमरदास जी ऊँचे व पवित्रा आचरण की प्राप्ति के लिए यह मार्ग दर्शाते है :-

लबु, लोभु, अहंकारु तजि त्रिासना बहुतु नाही बोलणा।।

(रामकली, म: ३, अनंदु, पृ. ९१८)

(4) अच्छी संगत

अंग्रेजी की एक कहावत है, 'Birds of Same Breed Flock Together' जिसके अनुसार पंजाबी भाषा की कहावत है ''जैसी संगत वैसी रंगत''। विद्यार्थियों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह अपने जीवन के विकास व सफलता के लिए शुभ कर्मों के साथ-साथ अच्छी संगत में रहें। अपने से अच्छे, सूझवान व पवित्रा आचरण वाले मित्रों के सानिध्य से लाभ उठायें।

संगत का मनुष्य के जीवन पर प्रभाव भक्त कबीर जी इस प्रकार वर्णन करते हैं:-

कबीर मनु पंखी भइओ,उडि उडि दह दिस जाइ ।।
जो जैसी संगति मिलै, सो तैसो फलु खाइ ।।८६।।

(श्लोक कबीर जीउ के, पृ. १३६९)

भावार्थ : मनुष्य का मन तो एक पक्षी की भांति है जो (मायावी पदार्थों के पीछे) दसों दिशाओं (चारों ओर) में दौड़ता है (व यह प्रकृति का नियम है कि) जो मनुष्य जैसी संगति में बैठता है, वैसा ही उसे फल मिलता है। बुरी संगति से बचने के लिए कबीर जी इस प्रकार सुचेत करते है :-

कबीर मारी मरउ कुसंग की, केले निकट जु बेरि।।
उह झूलै, उह चीरिऐ, साकत संगु न हेरि ।।८८।।

भावार्थ : बुरी संगति (मनमुखों की संगत अर्थात मन के पीछे दौड़ने वालों की संगत) कभी भी मत करो। केले के निकट बेरी उगी हुई हो, बेरी हवा से हुलारें लेती है केला(उस के कांटों से) चीरा जाता है। वैसे ही (हे कबीर) बुरी संगत में बैठने से, विकारों के प्रभाव से तेरा शरीर आत्मिक मौत मर जायेगा। तो फिर कैसी संगति की जाये? इस प्रश्न का उत्तर भक्त कबीर जी इस प्रकार देते है :-

कबीर संगति करिए साध की, अंति करै निरबाहु।।
साकत संगु न कीजीऐ, जा ते होइ बिनाहु।।१३।।

(पृ. १३६९)

भावार्थ :-हे कबीर मन की शान्ति व अच्छे जीवन के लिए केवल एक 'स्थान' है, वह है साध संगति या भले पुरुषों का साथ। इसके लिए भले पुरुषों की संगति में बैठना चाहिए। साध संगति वाला साथ (रिश्ता) अन्त तक निभता है। व कुसंग की संगति नहीं करनी चाहिए। इससे नाश (आत्मिक मौत) होने का भय है।

(5) नशों से परहेज़

आज अनेक किस्म के नशों का सेवन हमारे समाज में साध ाारणतय: प्रचलित है। इन नशों में शराब, तम्बाकू, भाँग, पोस्ता, ज़र्दा, हशीश, स्मैक, एल0 एस0 डी0, चरस कोकीन आदि नशे प्रमुख है।इनके अलावा वेलीअम, काम्पोज़, व खाँसी के घोलों (घुलनशील पदार्थों) आदि को भी नशा प्राप्ति के लिए प्रयोग किया जाने लगा है। स्कूलों व कालिजों के विद्यार्थियों में सिगरेट पीना, बीड़ी पीना, तम्बाकू व चूने वाले पान खाना, खैनी, गुटका व कुबेर आदि नशीले पदार्थों का प्रयोग आम देखा जाने लगा है।

वैज्ञानिक खोजों से प्राप्त निष्कर्षों से यह भली भाँति स्पष्ट हो चुका है कि नशीले पदार्थ हमारे शरीर के लिए ज़हर का काम करते है। तम्बाकू का सेवन करने वाले व्यक्तियों को मुँह, गले व फेफड़ों का कैन्सर होने की सम्भावना बहुत अधिक देखी गई है। शराब का सेवन करने वाले व्यक्ति जिगर (गुर्दे) की बीमारियों का शिकार होते हैं। चरस, गांजा, स्मैक व एल. एस. डी. आदि नशों का उपयोग करने से तो शरीर का नाड़ी प्रबन्ध बिलकुल नष्ट हो जाता है व मनुष्य अनेक मनोरोगों का शिकार हो जाता है। कुल मिलाकर मादक पदार्थों का सेवन

किसी प्रकार भी मनुष्य के लिए लाभप्रद नहीं है। इस तथ्य की पुष्टि विज्ञान भी करता है।

आओ, अब देखें कि धर्म इस विषय पर क्या विचार प्रकट करता है। गुरू साहिबान ने नशीले पदार्थों का सेवन करना सख्त मना किया है। उनके उपयोग से विकार हो जाते हैं। उनसे और कोई लाभ नहीं:-

इतु मदि पीतै नानका,बहुते खटीआहि बिकार।

(वार बिहागड़ा, म. ५, श्लोक म. १, पृ. ५५३)

जो लोग मादक पदार्थों, अर्थात शराब आदि का सेवन करते है, होश गँवा बैठते है एवं पागलों वाली हरकतें करते हैः-

दुरमति मदु जो पीवते, बिखली पति कमली।

(आसा, म. ५, पृ. ३११)

मादक पदार्थों का सेवन करने से मनुष्य होश गँवा बैठता है, इसलिए, उसे इन नशों से, जहाँ तक हो सके बचना चाहिए :

जितु पीतै मति दूरि होइ, बरलु पवै विचि आइ।।
आपणा पराइआ न पछाणई, खसमहु धके खाइ।।
जितु पीतै खसमु विसरै, दरगह मिलै सजाइ ।।
झूठा मदु मूलि न पीचई, जे का पारि वसाइ ।।

(वार बिहागड़ा, म. ५, श्लोक म. ३, पृ. ५५४)

गुरू नानक देव जी ,शारीरिक व मानसिक संतुलन को बनाये रखने के लिए, ऐसे बुरे (मादक) पदार्थों की बुराई करते हुए फुर्माते है :-

बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ।।
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ, मन महि चलहि विकार ।।

(सिरी राग, म. १, पृ. १६)

गुरू साहिब ने सांसारिक रस-भोगों को विभिन्न प्रकार के रोगों का कारण बनने के बारे में स्पष्ट समझाया है :-

खसमु विसारि कीए रस भोग।।

तां तनि उठि खलोए रोग ।। *(मलार, म, १, पृ. १२५६)*

जब तक मनुष्य विषय विकारों के आधीन होकर कार्य करता है तब तक वह लाख समझाने पर भी नहीं समझता व मदमस्त होकर विषय विकारों मे ही उलझा रहता है :

मूरखु होइ न आखी सूझै ।।
जिहवा रसु नही कहिआ बूझै ।।
बिखु का माता जग सिउ लूझे।। *(आसा, म. २, पृ. ४१४)*

दुष्ट संगति ही विषय-विकारों को जन्म देती है। इनकी ओर प्रेरित करती है। नशों व अन्य विषय-विकारों के त्याग के लिए दुष्ट संगति का त्याग जरूरी है।

पर दारा, पर धनु पर लोभा, हउमै बिखै बिकार ।।
दुसट भाउ तजि निंद पराई, कामु क्रोधु चंडार ।।
(मलार, म. २, पृ. १२५५)

(6) सद्‌भावना

आज वैज्ञानिक सफलताओं ने सम्पूर्ण विश्व को एक छोटे से नगर में तब्दील कर दिया है। विश्व के एक कोने में घटित होती घटनाओं को हम आजकल की टैक्नोलॉजी के द्वारा, विश्व के किसी भी दूसरे कोने में बैठकर तुरन्त ही देखने की योग्यता प्राप्त कर चुके हैं। आज एक विश्व-व्यापी भाईचारे की स्थापना संभव होती जा रही है।

वैज्ञानिक खोजों ने भिन्न-भिन्न रंगों, नस्लों व क्षेत्रों के लोगों में शारीरिक समानता का रहस्य जान लिया है। नर व मादा के बीच के अन्तर खत्म हो चुके है, मनुष्य द्वारा प्रचलित जाति-पाँति, ऊंच-नीच, छुआ-छूत आदि के वर्णभेदों का खोखलापन जाहिर हो चुका है। छुआ-छूत की अमानवीय, गैर वैज्ञानिक रीति का खात्मा करने में विज्ञान ने बहुत बड़ा योगदान दिया है। आज विश्व रूपी नगर के निवासियों के लिए सर्व सांझीवालता की सोच एक अत्यन्त आवश्यक व अहम ज़रूरत है।

आओं देखें कि सिख धर्म इस मानवीय मार्ग पर चलने के लिए किस प्रकार मार्गदर्शन करता है। -

सम्पूर्ण मानवता की आत्मिक तृप्ति के लिए प्रभु का 'नाम जपना', आर्थिक सन्तुष्टता के लिए 'नेक कर्म करना', एवं सामाजिक भलाई के लिए 'बाँट कर खाना' का एक अद्वितीय सिद्धान्त सृजित करके, गुरु नानक देव जी ने धर्म को एक 'सभ्य जीवन जाच' (WAY OF LIFE) का स्वरूप प्रदान किया। यह सिद्धान्त मनुष्य को निजी तौर पर प्रभु-प्रीति, सुख, शान्ति, सन्तुष्टता, मेहनत प्रदान करके सम्पूर्ण समाज में खुशहाली व आपसी प्रेम-प्यार पैदा करता है। आपके निम्नलिखित वचन हर पल याद रखने वाले हैं:-

जिनी नामु धिआइआ, गए मसकति घालि।।
नानक, ते मुख उजले, केती छुटी नालि।। *(जपु जी साहिब)*

घालि खाइ, किछु हथहु देइ।। नानक राहु पछाणहि सेइ।।
(सारंग की वार, श्लोक म: १, पृ. १२४५)

हकु पराइया नानका, उसु सूअर उसु गाइ।।
गुरु पीर हामा ता भरे, जा मुरदारु ना खाइ।।
(मांझ की वार, श्लोक म: १, पृ. १४१)

इसी प्रकार सर्व-सांझीवालता व भाईचारे का ऐलान करते हुए दबी, घुटी व नित्य लिताड़ी जा रही लोकाई को एक नया झोंका देने के लिए, गुरू नानक देव जी ने निडर होकर बताया है:-

ऐ जी ना हम उतम, नीच न मधिम
हरि सरणागति हरि के लोग।। *(राग गूजरी, म. ३, पृ. ५०४)*

गुरू नानक देव जी ने प्रभु के जीवों को 'नीच' व 'अछूत' कह कर दुत्कारने की बजाए, उन्हें अपने अंग जानकर प्यार व सत्कार करने का सन्देश दिया है एवं 'जात-पात' व ऊँच-नीच पर आधारित वर्ण-व्यवस्था को नकार दिया है:-

फकड़ जाती, फकड़ नाउ।। *(सिरी रागु, म. १, पृ. ८३)*

वह तो स्वयं को नीचों से भी नीच कहलवाकर, उनके संग-साथ, सुख व आनंद अनुभव करते हैं:-

नीचा अंदरि नीच जाति
नीची हू अति नीच।।
नानकु तिन कै संगि साथि,
वडिआ सिउ किआ रीस।। *(सिरी रागु, म. १, पृ. १५)*

सभी मनुष्य एक प्रभु की सन्तान होने के कारण, एक दूसरे के भाई-भाई, व संगी-साथी हैं:-

एक पिता, एकस के हम बारिक।।
(सोरठि, म. ५, पृ. ६११)

मानस की जात सभै एकै पहिचानबो।।
(अकाल उसतति, पा. १०)

या फिर,
नानक पिता माता है हरि प्रभु
हम बारिक हरि प्रतिपारे।। *(रामकली, म. ४, पृ. ८८२)*

इसी प्रकार सभी के प्रति सद्भावना का सन्देश सिख धर्म में साफ झलकता है। गुरू महाराज तो सभी को अपना मीत, प्यारा मित्रा या सज्जन बनाने के लिए आमंत्राण देते हैं:-

सभु को मीतु हम आपन कीना, हम सभना के साजन।।
(धनासरी, म. ५, पृ. ६७१)

ना को बैरी नही बिगाना,
सगलु संगि हम कउ बनि आई।। *(पृ. १२९९)*

वह तो निरभउ (निडर) व निरवैर (शत्रु रहित) होने का सन्देशा भी देते हैं:-

भै काहू कउ देत नहि, नहिं भै मानत आन।।
कहु नानक सुनि रे मना, गिआनी ताहि बखानि।। 16।।
(सलोक म. ९, पृ. १४२७)

भावार्थ : गुरू नानक के नौवें स्वरूप श्री गुरू तेग बहादुर साहिब जी का कथन है कि हे मन! सुन उसी मनुष्य को तू ज्ञानवान कह, जो मनुष्य किसी को डराता नहीं है और ना ही औरों से डरता है। अर्थात न किसी से डरता है और न किसी को डराता है।

(भावार्थ- जो मनुष्य निरवैर है व निरभउ है)

बाबा फरीद जी तो सद्भावना की बात करते हुए इस प्रकार फुर्माते है:

सभना मन माणिक, ठाहणु मूलि मचांगवा।।
जे तउ पिरीआ दी सिक, हिआउ न ठाहे कहीदा।।१३०।।

(श्लोक फरीद जी, पृ. १३८४)

भावार्थ: सभी जीवों के मन मोती है, किसी को भी दुखाना वैसे भी अच्छा नहीं। यदि तुझे प्यारे प्रभु को मिलने की चाह है तो किसी का दिल मत दुखा।

सिख धर्म में 'संगत व पंगत' की प्रथा की स्थापना भी मनुष्यों में बराबरी एवं भाईचारे की स्थापना की ओर एक महत्वपूर्ण कदम व बहुमूल्य योगदान है।

इस प्रकार धर्म, विद्यार्थियों के लिए सद्भावना, भाईचारा, प्रेम व आपसी प्रेम-प्यार का एक खूबसूरत सन्देश प्रस्तुत करता है। जिसे विद्यार्थियों व साधारण मनुष्यों को अपने प्रतिदिन के व्यवहार में अच्छे ढंग से प्रयोग में लाना चाहिए।

(8) वैज्ञानिक सूझ-समझ

विज्ञान का मूल भाव 'तर्कशील ज्ञान' है। वैज्ञानिक सोच 'जांचकारी मानसिक स्वभाव' का प्रगटावा करती है। वैज्ञानिक सोच ही, वैज्ञानिक स्वभाव का आधार होती है। वैज्ञानिक मनोवृत्ति (Attitude) वाला व्यक्ति, अंधविश्वासों व वहमों-भ्रमों में विश्वास नहीं रखता। जैसे कि ऐसी धारणा कि काम के लिए घर से निकलते समय बिल्ली द्वारा रास्ता काटे जाने के कारण, काम सिरे नहीं चढ़ेगा या फिर किसी काम के लिए चलते

समय, किसी द्वारा छींक मार देने से अपशगुन होता है। ऐसी सोच अवैज्ञानिक सोच की प्रतीक है।

वैज्ञानिक सूझ-बूझ का धारणी मनुष्य प्रकृति के रहस्यों को जानने के लिए प्रयत्नरत् रहता है। वह प्राकृतिक घटनाओं से भय नहीं खाता, अपितु उसमें ऐसी घटनाओं के प्रति अचंभित होने की भावना उत्पन्न होती है। स्थापित अंध-विश्वासों, तर्कहीनता या गल्त धारणाओं के ऊपर विजय पाने की मनोवृत्ति, किसी भी व्यक्ति की वैज्ञानिक सूझ-समझ व वैज्ञानिक स्वभाव का महत्वपूर्ण प्रगटावा होती है।

ठीक इसी प्रकार ही सिख धर्म में अनेक उदाहरण ऐसे उपलब्ध है जो वैज्ञानिक सोच का प्रतीक है, जैसे कि गुरसिख (गुरू का सिख) किसी कार्य की आरम्भता से पहले कोई मुहूर्त नहीं निकलवाता एवं न ही कोई शगुन विचारता है। यह सभी भ्रम है:-

सगुन अपसगुन तिस कउ लगहि, जिसु चीति न आवै।।

(आसा, महला ५, पृ. ४०१)

गुरू का सिख किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व केवल प्रभु को याद करता है व उसी के आगे सफलता के लिए अरदास (विनती) करता है:-

आपे पूरा करे सु होइ।।
एहि थिती वार दूजा दोइ।।
सतिगुर बाझहु अंधु गुबारु।।
थिती वार सेवहि मुगध गवार।।

(बिलावलु, म. 3, पृ. ८४३)

सिख धर्म में व्रत रखने की इजाज़त नहीं। वैसे ही शरीर को कष्ट देने का कोई लाभ नहीं। यह पाखंड है। सच्चा व्रत तो काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार से मन को रोकना है।

अंनु न खाहि देही दुखु दीजै।।

बिनु गुर गिआन त्रिपति नहीं थीजै।।

(रामकली, म. १, पृ. ९०५)

गुरू का सिख सूतक-पातक की विचार नहीं करता।

जन्म व मृत्यु से सम्बन्धित मानों यह अपवित्राताएं भ्रम रूपी कर्म (अन्धविश्वास) है। गुरू द्वारा दिया ज्ञान ही इनसे मुक्ति दिला सकता है।

आसा की वार में आप फुर्माते है:-

सभो सूतकु भरमु है, दूजै लगै जाइ।।
जंमणु मरणा हुकमु है, भाणै आवै जाइ।।
खाणा पीणा पवित्रु है, दितोनु रिजकु संबाहि।।
नानक जिनी गुरमुखि बुझिआ, तिना सूतकु नाहि।।३।।

(पृ. ४७२)

इस प्रकार सिख धर्म समाज में प्रचलित वहमों-भ्रमों व अन्धविश्वासों का खण्डन करता है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वह धर्म व विज्ञान की इस 'एक जैसी सोच' से शिक्षा लें अपने जीवन में वैज्ञनिक सूझ-समझ एवं वैज्ञानिक स्वाभाव का संचार करें।

जैसे कि हमने पहले बताया है कि वैज्ञानिक मनोवृत्ति वाला मनुष्य प्राकृतिक घटनाओं से भयभीत नहीं होता बल्कि उनके वैज्ञानिक आधार को जानता हुआ आश्चर्य, हैरानी या विसमाद की भावना का प्रगटावा करता है। ठीक इसी प्रकार ही, आसा की वार में सम्मिलित यह सलोक गुरू नानक साहिब की वैज्ञनिक सोच का प्रत्यक्ष प्रमाण है:-

विसमादु नाद विसमादु वेद।।
विसमादु जीअ विसमादु भेद।।
विसमादु रूप विसमादु रंग।।
विसमादु नागे फिरहि जंत।।
विसमादु पउणु विसमादु पाणी।।
विसमादु अगनी खेडहि विडाणी।।
विसमादु धरती विसमादु खाणी।।

विसमादु सादि लगहि पराणी।।
विसमादु संजोगु विसमादु विजोगु।।
विसमादु भुख विसमादु भोगु।।
विसमादु सिफति विसमादु सालाह।।
विसमादु उझडु विसमादु राह।।
विसमादु नेड़ै विसमादु दूरि।।
विसमादु देखै हाजरा हजूरि।।
वेखि विडाणु रहिआ विसमादु।।
नानक बुझणु पूरै भागि।।११।।

(आसा की वार, श्लोक म. १, पृ. ४६३)

विसमाद क्या है? प्रकृति के अनगिनत रंगों के पदार्थो को देखकर मन में एक हैरानी पैदा होती है। जिससे 'अद्‌भुत' आनंद या रस उत्पन्न होता है। प्रकृति के अनगिनत पदार्थो को देखकर (जिन्हें देखकर मनुष्य की अक्ल चकित हो जाए, जिनसे कादर (प्रभु) की कारीगरी का कमाल प्रकट हो) मनुष्य के मन में एक धरधराहट जैसी, एक कंपकंपी सी आ जाती है। इस थरथराहट या इस कंपकंपी को ही 'विसमाद' कहा जाता है।

उपरोक्त श्लोक में सतिगुरू जी समझातें है कि अद्‌भुत कुदरत (प्रकृति) को देखकर मन में झरनाहट छिड़ जाती है-हुलारा सा आता है।

सृष्टि में कई प्रकार की आवाजें, भिन्न-भिन्न प्रकार के ज्ञान (जानकारियां) विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु, हवा-पानी, अद्‌भुत खेल करती हुई आग, पृथ्वी की विशालता-बहुरंगी प्रकृति, जीवों की उत्पत्ति के विभिन्न ढंग, संसार में जीवों का मिलना व बिछुड़ना, कहीं भूख की तड़प, व कहीं पदार्थो का प्रयोग, कहीं प्रभु की सिफत सलाह (गुणगान) करते व कहीं जीवन-मार्ग से कुराहे जा रहे लोग, कईयों का प्रभु को दूर कहना व कईयों को नज़दीक प्रतीत होना।... आदि मन में आश्चर्य का भाव पैदा करते है, विसमाद पैदा करते है।

यह एक अच्छी वैज्ञानिक सोच का प्रतीक है। आज के वैज्ञानिक

भी प्रकृति की विशालता, विभिन्नता व अनन्तता को जानकर ऐसी अद्भुत दशा का आनंद प्राप्त कर चुके है। विद्यार्थियों को भी चाहिए कि वह प्राकृतिक क्रियाकलापों के अद्भुत भेदों का ज्ञान हासिल करके अद्भुत् अवस्था वाली मनोवृत्ति को अपना स्वभाव बनाएँ।

(9) प्रकृति से प्रेम व वातावरण की संभाल

हमारे चारों ओर का वातावरण व इसकी सजीव व निर्जीव वस्तुएँ प्रकृति का अनुपम रुप है। यह सभी कुछ हमारे वातावरण के सृजक है। आज विज्ञान व टैक्नोलॉजी के अन्धा- धुंध विकास व सफलता ने हमारे वातावरण के प्राकृतिक सन्तुलन को बिगाड़ कर रख दिया है। हमारे वायुमण्डल की हवा प्रदूषण का शिकार हो चुकी है। हमारी नदियों, झीलों व समुन्दरों का पानी प्रदूषित हो चुका है। पृथ्वी की रक्षक ढाल-ओजोन पर्त छलनी-छलनी हो चुकी है। कीटनाशक दवाओं का अधिकतम प्रयोग व जंगलों की अन्धाधुन्ध कटाई ने धरा-प्रदूषण में बहुत बढ़ोत्तरी की है। आज ग्रीन हाउस गैसों की बढ़ रही मात्राा ने हमारे वायुमण्डल का तापमान बढ़ाना शुरु कर दिया है।

वर्तमान खोज कार्यो से यह स्पष्ट हो चुका है कि यदि मनुष्य ने पृथ्वी पर अपने हस्ती को चिर-स्थायी बनाना है तो उसके लिए उपरोक्त समस्याओं का सही हल ढूंढना अति आवश्यक है व आज हम सभी पृथ्वी के प्राकृतिक माहौल की सुरक्षा के बारे में चिन्तित हैं।

आओ अंब देखें कि धर्म, पृथ्वी व इसके प्राकृतिक माहौल के बारे में क्या विचार देता है।

जपुजी साहिब के अंतिम श्लोक में गुरू नानक देव जी फुर्माते हैः-

पवणु गुरू, पाणी पिता माता धरति महतु।।
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ, खेलै सगल जगतु।।

(जपु जी पृ. ८)

पवन या प्राण (शरीर के लिए ऐसे है) जैसे गुरू (जीवों की आत्मा के लिए) है। पानी (सभी जीवों का) पिता है व पृथ्वी (सभी की) बड़ी मां है। दिन व रात दोनों दाई व दाया (भाव बच्चों की सेवा करने

वाले व खिलाने वाले स्त्री व पुरुष) है सारा संसार खेल रहा है। भाव: हवा, पानी व पृथ्वी मनुष्य के जीवन के लिए अति आवश्यक है। तो क्या प्रदूषित हवा में ली गई सांस जीवन को कायम रख सकती है? क्या दूषित पानी शरीर को अरोग्य व तन्दुरुस्त रख सकता है? बिल्कुल नहीं। तभी तो हमे पवन, पानी व पृथ्वी की स्वच्छता का ख्याल हमेशा रखना पड़ेगा। इस प्रकार गुरबाणी हमें पृथ्वी व इसके प्राकृतिक माहौल (हवा, पानी आदि) की पवित्राता बनाई रखने का सन्देश देती है। वातावरण की संभाल (पवित्राता) धर्म के पक्ष से भी अति आवश्यक है। गुरू नानक देव जी तो आसा की वार में फुर्माते है:-

'पहिला पाणी जीउ है, जितु हरिआ सभु कोइ'

(पृष्ठ ४७२)

इस प्रकार वह पानी को जीवन का स्रोत मानते है। यदि जीवन का भण्डार ही दूषित हो जाये, सूख जाये या नष्ट हो जाए तो क्या जीवन कायम रह सकता है? जी नहीं। वैज्ञानिक भी मानते है कि पानी के बिना पृथ्वी पर जीवन ही सम्भव नहीं था। चाँद व अन्य ग्रहों पर जीवन न होने का मुख्य कारण पानी ही है। तो फिर क्या पानी की मलीनता को कम करना व उसकी पवित्राता को बनाए रखना मानवीय कर्तव्य नहीं?

विद्यार्थियों का विशेषकर व सभी मनुष्यों का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह प्राकृतिक सन्तुलन की स्थापना के लिए पर्यावरणीय देखभाल की ओर विशेष ध्यान दें।

(10) बालों की महत्वता

बाल हमारे शरीर का एक महत्वपूर्ण अंग है। जोकि हमारे शरीर को गर्मी व सर्दी से बचायें रखने की योग्यता रखते है। बालों व उनमें निहित हवा की निरोधक पर्त, शरीर के तापमान को अक्समात घटने या बढ़ने से बचाती है। इस प्रकार बाल, शरीर के भीतरी तापमान की सन्तुलित व निश्चित मात्रा को कायम रखने में सहयोग करते है। हमारे

शरीर के विभिन्न भागों में उगे हुए बाल, सूरज से आती नुकसानदायक विकिरणों (पराबैंगनी किरणों) को सीधा चमड़ी तक पहुँचने से रोकते हैं। जिनसे चमड़ी का कैंसर होने के सबूत मौजूद हैं। ओजोन पर्त में छेद हो जाने के कारण तो यह खतरा और भी बढ़ गया है। आँखों की पलकें, नाक व कान की नालियों में मौजूद बाल हमारे आसपास की हवा में मौजूद मिट्टी धूल व राख आदि के सूक्ष्म व खुरदरे कणों को हमारे शरीर के नाजुक पर अति महत्वपूर्ण अंगों (विशेषकर आँखों, साइनस व कान के पर्दों तक नहीं पहुँचने देते। न्यूकली या रेडियोधर्मी विकिरण से (विशेषकर अल्फा व बीटा कणों से) मानवीय शरीर की सुरक्षा के लिए हमारे शारीरिक अंगों पर उगे हुए बाल, एक सुरक्षात्मक ढाल की भांति कार्य करते हैं। इस तथ्य की पुष्टि विद्वानों द्वारा की जा चुकी है।

आखों की भौहें, पानी या पसीने को आंखों में जाने से रोकती है। ऐसा भौहों की विशेष शक्ल व बनावट के कारण सम्भव होता है। हमारी जाँघों व लिंग-स्थानों में मौजूद बाल, हमारे द्वारा कार्य करते समय, हमारे अंगों व हमारे शरीर की आपसी रगड़ को घटाते हैं।

हमारे शरीर के बाल, पसीने के वाश्पीकरण के लिए अधिक सतह प्रदान करने में मदद करते हैं। बालों की होंद मनुष्य के शरीर को सुन्दर बनाती है, नहीं तो गंजे लोग बालों की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील क्यों रहते हैं? व बाल कटवाने वाले लोग पूरे गंजे होना पसन्द क्यों नहीं करते? दाढ़ी व मूँछें, नर व मादा का अन्तर बताने के लिए प्रकृति द्वारा दिए विशेष उपहार हैं। वर्णन योग्य है कि प्रकृति में मुख्य रुप से सिर्फ नर जीवों को ही दाढ़ी या मूँछों से सजाया गया है जैसे कि शेर, मोर, हिरन व अनेकों पक्षी इत्यादि।

बाल हमें सूर्य की तेज़ धूप व बारिश से बचाते है। बालों में संवेदना की अनहोंद इनके निर्जीव होने का प्रमाण नहीं है। यदि बाल निर्जीव है तो उन्हें कैसे पता चलता है कि उन्हें काटा गया है एवं एक

विशेष लम्बाई तक बढ़कर अपनी हाज़िरी का प्रगटावा करते है। जब यह विशेष लम्बाई प्राप्त कर ली जाती है तो बाल और अधिक लम्बे होने से रुक जाते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि हमारा दिमाग, बालों के कटे होने या न कटे होने की अवस्था के बारे में सुचेत रहता है। जोकि स्पष्ट रूप से बालों में जीवन होने की निशानी है।

दूसरा बाल भी, शरीर के अन्य अंगों की भाँति, उम्र के प्रभाव के अनुसार अपनी मोटाई, अपनी लम्बाई व अपना रंग बदलते हैं। बालों की चमक (LUSTRE OR SHINE ETC.) भी किसी व्यक्ति की तन्दरुस्ती का प्रतीक मानी जाती है।

पोरी फेरा जाति के जीव ऐसे जीव है जिनमें नाड़ी सिस्टम नहीं होता। उनके शरीर के किसी भाग के ऊपर यदि कोई चोट मारी जाये तो इन जीवों में कोई संवेदना नज़र नहीं आती।

परन्तु क्या हम इन जीवों को निर्जीव मान सकते है? बिल्कुल नहीं। ठीक इसी प्रकार ही अनेकों पौधों में (जो कि जीवन्त वस्तुएँ हैं) भी कोई संवेदना नहीं होती तो फिर यदि बालों में कोई संवेदना नही हो तो भी उन्हें निर्जीव नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार विज्ञान ने बालों को मनुष्य के शरीर का सजीव भाग सिद्ध करते हुए इनकी महत्वपूर्णता को स्वीकार कर लिया है।

बालों के काटने से होने वाले दीर्घकालीन दुष्प्रभावों के बारे में गम्भीर चिन्तन की आवश्यकता है ताकि मनुष्य को सम्भावित भविष्य की समस्याओं से बचाया जा सके। ऐसे परिणाम भी सामने आये हैं कि भौहों एवं नाक कान के बालों को काटने से या निकाल देने से आँखों, नाक व गले एवं कानों की बीमारियों की संख्या में बढ़त हुई है। सिर व लिंग स्थानों के बाल, शरीर के सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण अंगों (दिमाग व जनन अंगों) को वातावरणीय हालातों (विशेषकर अधिक सर्दी या अधिक गर्मी) से बचाते हैं। अक्समात् चोट, धक्के या दुश्मन द्वारा प्रहार के समय

सम्बन्धित अंग की रक्षा के लिए यह एक प्राकृतिक गद्दे (Cushion) का कार्य करते है एवं प्रहार की मार को कम करने में सहयोगी सिद्ध होते हैं।

सिख धर्म हमेशा ही बालों की देख-रेख व बालों के रखरखाव की महत्वपूर्णता पर बल देता है। तभी तो गुर शोभा ग्रंथ में इस प्रकार लिखा है:-

हुका नाह पीवे, सीस दाढ़ी न मुनावे।
सो तो वाहिगुरू, गुरू जी का खालसा।।

बालों के बारे में एक स्थान पर और वर्णित है :-

सतिगुर की इस मोहर सुहावण,
छाप गुरू की गुर सम जाणे,
गुर सम अदब केस को ठाने।

इस प्रकार धर्म व विज्ञान दोनों ही बालों की महत्वता व लाभों को बताते हैं। सभी मनुष्यों का साधारणतय: व विद्यार्थियों का विशेषकर यह कर्तव्य हो जाता है कि वह बालों को न कटवाएँ व उनकी उचित देखभाल की ओर विशेष ध्यान दें।

(11) सेवा-भावना

उस काम को सेवा कहा जाता है जो किसी और के लाभ के लिए किया जाये। सेवा समाज के लिए जरूरी है क्योंकि हर एक मनुष्य स्वै-परिपूर्ण नहीं होता एवं सभी काम स्वयं नहीं कर सकता। इसलिए हर मनुष्य को दूसरों की आवश्यकता होती है। बिना किसी भेद-भाव के सारी मानवता की सेवा करना अति उत्तम माना जाता है। गुरमति अनुसार मानवता की सेवा प्रभु-परमात्मा की सेवा है। सच्ची सेवा सन्तोषी लोग ही कर सकते है:-

सेवा करत होए निहकामी।।
तिस कउ होति प्रापत सुआमी।।

निस्वार्थ सेवा द्वारा मनुष्य, प्रभु मिलाप के योग्य हो जाता है:-

सेव कीती संतोखीई जिनी सचो सचु धिआइआ।।
ओनी मंदै पैरु न रखिओ करि सुक्रित धरमु कमाइआ।।

(आसा की वार, पृ. ४६७-४६८)

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ।। ता दरगह बैसणु पाईऐ।।

(सिरीरागु, म. १, पृ. २६)

सेवा के अनेक स्वरूप है जैसे कि प्यार, परोपकार व समानता। गुरबाणी फ़ुर्मान है:-

साकत सिउ मुखि जोरिऐ, अध वीचहु टूटै।।
हरि जन की सेवा जो करे, इत ऊतहि छूटै।।५।।

(बिलावलु, म. ५, पृ.८११)

पवहु चरणा तलि, ऊपर आवहु, ऐसी सेव कमावहु।।
आपस ते ऊपरि सभ जाणहु, तउ दरगह सुखु पावहु।।

(रामकली, म. ५, पृ.८८३)

इस प्रकार सिख धर्म में समाज-सेवा को बहुत महत्व दिया गया है। सेवा-भावना का विकास विद्यार्थियों को व हम सभी को सुखी समाज-सृजन में सहयोग करता है।

वैज्ञानिक क्षेत्रा में भी अनेकों वैज्ञानिकों ने अपने अन्वेषणों से प्राप्त लाभों को निजी स्तर पर प्राप्त करने की अपेक्षा (जैसे कि पेटेंट करवा कर) उन लाभों को सामाजिक कल्याण के लिए प्रयोग करने के लिए तरज़ीह दी है। इन वैज्ञानिकों में मेरी क्यूरी, पैरी क्यूरी व अलफ्रेड नोबल के नाम विशेष हैं।

समाज सेवा का गुण व सेवा-भावना के विकास की प्रेरणा हमें धर्म व विज्ञान दोनों से ही प्राप्त होती है। आवश्यकता है उपरोक्त बताये विचारों को जानकर व समझकर अपने जीवन में अपनाने की। ऐसा करके ही हम अच्छे समाज की सृजना में अपना योगदान डाल सकते है।

सिख मिशनरी कालेज की खोज भरपूर पुस्तकें

बच्चों को लिये

प्रकाशन नः		मूल्य
79	सिख धर्म की प्राथमिक जानकारी	6
70	दस गुरूओं का संक्षिप्त इतिहास	11
83	खून शहीदों का (16 चित्रों सहित)	10
213	सिख धर्म प्रश्नोत्तरी भाग 1	7
214	सिख धर्म प्रश्नोत्तरी भाग 2	10
215	सिख धर्म प्रश्नोत्तरी भाग – 3	17
216	सिख धर्म प्रश्नोत्तरी भाग 4	19

गुरबाणी व्याख्या

प्रकाशन नः		मूल्य
87	गुरबाणी व्याख्या भाग-1	5
88	गुरबाणी व्याख्या भाग 2	6
89	गुरबाणी व्याख्या भाग-3	9
90	गुरबाणी व्याख्या भाग-4	6
268	चुनींदा शब्दों की व्याख्या भाग-5	8
258	चुनींदा शब्दों की व्याख्या भाग-8	6

गुरबाणी स्टीक (अर्थ)

प्रकाशन नः		मूल्य
157	जपु जी साहिब सटीक	10
158	जापु साहिब सटीक	9
161	त्व प्रसादि सवय्ये सटीक	4
97	सरलार्थ रहरासि साहिब तथा सोहिला	9
141	33 सवैये सटीक	6
212	सद सटीक	6
250	अनंदु साहिब सटीक	6
260	बारहमाहा सटीक (तुखारी व माझ)	8
261	अकाल उस्तति में से कबितों की व्याख्या	7
244	रामकली की वार (राय बलवंड सतै डूमि आखी)	3
235	सिद्ध गोस्टि सटीक	11
236	आनन्द कारज (सिख विवाह पद्धति)	5
263	नितनेम सटीक	34

जीवनियां

प्रकाशन नः		मूल्य
103	जीवन यात्रा गुरू नानक देव जी	15/–
174	जीवन यात्रा गुरू अंगद देव जी	10
221	जीवन वृतांत श्री गुरु अमरदास जी	21/–
264	जीवन वृतांत गुरु रामदास जी	15/–
252	जीवन वृतांत गुरु अर्जुन देव जी	19/–
234	गुरु अर्जुन देव जी की शहीदी	8/–
262	अदम्य पुरुष – जीवन वृतांत गुरू गोबिन्द सिंघ जी	23/–
162	बाबा बंदा सिंघ बहादुर	6/–
231	नवाब कपूर सिंघ	4/–
135	स: जस्सा सिंघ आहलुवालिया	6/–
143	भाई मनी सिंघ जी	4/–
254	भाई नन्द लाल सिंघ जी	6/–
255	सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया	5/–
240	भाई गुरदास जी	5/–
243	ज्ञानी दित्त सिंघ	4/–
225	भाई महाराज सिंघ	3/–
139	महाराजा रणजीत सिंघ	5/–
187	स: शाम सिंघ अटारी	4/–

प्रकाशन नः		मूल्य
188	अकाली बाबा फूला सिंघ	4/–
189	बाबा गुरदित्त सिंघ कामागाटामारू	4/
251	सिख चुनींदा जीवनियां	9/–
242	सिख धर्म के महान विद्वान	7/–

शिक्षाप्रद साखियां

प्रकाशन नः		मूल्य
72	शिक्षाप्रद साखियां भाग-1	4/–
112	शिक्षाप्रद साखियां भाग 2	5/–
146	शिक्षाप्रद साखियां भाग 3	7/–
165	शिक्षाप्रद साखियां भाग-4	5/–
269	शिक्षाप्रद साखियां भाग 6	8/–

मोर्चे व लहरें

प्रकाशन नः		मूल्य
164	बब्बर अकाली आन्दोलन	4
190	मोर्चा गंगसर जैतो	4
253	मोर्चा गुरु का बाग	5
228	सिख मिसलें	7
237	साका ननकाना साहिब	5
239	सिंघ सभा लहर	9
265	गुरुद्वारा सुधार लहर	10

सिख धर्म का प्रचार

प्रकाशन नः		मूल्य
163	पंथ दर्दीओ कुछ करो भाग-1	7/–
176	पंथ दर्दीओ कुछ करो भाग–2	5/–

सिख विचारधारा (दर्शन)

प्रकाशन नः		मूल्य
80	सिख जीवन पद्धति	5
84	खालसा की परिकल्पना	5
102	शब्द गुरू एवं देहधारी गुरूडंम	10
81	सिख धर्म फिलासफी भाग–1	11
98	सिख धर्म फिलासफी भाग-2	13
166	सिख धर्म फिलासफी भाग-3	5
218	सिख धर्म फिलासफी भाग-4	13
219	सिख धर्म फिलासफी भाग-5	15
220	मूर्ति पूजा	9
257	न्यारा खालसा	9
230	श्री गुरु तेग बहादुर जी के उपदेश	3
95	गुरु मानीओं ग्रंथ	8
92	सिख रहत मर्यादा	5
186	सिमरन कैसे करें	4
209	सिखी नये युग का धर्म	5
248	सभसै ऊपर गुरु सबदु वीचार	5
256	सिख धर्म सम्बन्धी प्रश्न उत्तर	32/–

तुलनात्मिक अध्ययन

प्रकाशन नः		मूल्य
229	इसाई मत और गुरमति	5/–
232	जैन मत और गुरमति	5/–
249	सिखी और समाजवाद	4/
233	इस्लाम और गुरमति	4/–
245	हिन्दु धर्म और गुरमति	6

मिश्रित

प्रकाशन नः		मूल्य
191	भारत की आजादी की लडाई में सिखों का योगदान	6/–
192	चिठ्ठियां सिख सतिगुरां वल्लं पाइआं	5/
180	शब्द लगो गुर मीठा	12/–
182	साधू दयानन्द और मेरा संवाद	5/–
233	शरीर अरोग्य कैसे हो	6
226	कबीर साहिब की विचारधारा और समाज सुधार	3

ENGLISH BOOKS

प्रकाशन नः		मूल्य
177	The Baisakhi	3/-
56	Basic Principles of Sikhism	6/-
53	Why Am I a Sikh ?	3/-
104	Propagation of Sikh Thought	5/-
223	Sikhism	4/-
224	Sikhism - A Universal Message	22/-
246	Brief History of the Sikh Gurus	10/-
222	Teaching Sikh Heritage to the Youth	18/-
91	Guru Nanak's Impact on History	9/-
181	Blood of Martyrdom	9/-
172	Sikh Sakhies for the Youth	16/-
173	The Khalsa Generals	12/-
210	Guru Nanak Dev Ji & His Religion	4/-

ਪ੍ਰੋ: ਸਾਹਿਬ ਸਿੰਘ ਲਿਖਤ ਪੁਸਤਕਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

	ਗੁਰਬਾਣੀ ਵਿਆਕਰਣ	80/-
	ਆਦਿ ਬੀੜ ਬਾਰੇ	50/-
	ਗੁਰਬਾਣੀ ਤੇ ਇਤਿਹਾਸ ਬਾਰੇ	36/-
	ਬੁਰਾਈ ਦਾ ਟਾਕਰਾ	40/-
	ਸਿੱਖ ਸਿਦਕ ਨਾ ਹਾਰੇ	30/-
	ਸਰਬੱਤ ਦਾ ਭਲਾ	35/-
	ਧਰਮ ਤੇ ਸਦਾਚਾਰ	30/-
	ਸਦਾਚਾਰਕ ਲੇਖ	25/-
	ਜੀਵਨ ਬ੍ਰਿਤਾਂਤ ਗੁਰੂ ਹਰਿਗੋਬਿੰਦ ਸਾਹਿਬ ਜੀ	8/-
	ਜੀਵਨ ਬ੍ਰਿਤਾਂਤ ਗੁਰੂ ਹਰਿਰਾਇ, ਗੁਰੂ ਹਰਿਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਜੀ	6/-
	ਜੀਵਨ ਬ੍ਰਿਤਾਂਤ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਸਾਹਿਬ	6/-
	ਭੱਟਾਂ ਦੇ ਸਵੱਈਏ ਸਟੀਕ	45/-
	ਸਲੋਕ ਫਰੀਦ ਜੀ ਸਟੀਕ	30/-
	ਸਲੋਕ ਕਬੀਰ ਜੀ ਸਟੀਕ	40/-
1	ਭਗਤ ਬਾਣੀ ਸਟੀਕ (12 ਭਗਤਾਂ ਦੀ)	40/-
2	ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਸਟੀਕ	40/-
3	ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਸਟੀਕ	50/-
4	ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਕਬੀਰ ਜੀ ਸਟੀਕ (1)	60/-
5	ਬਾਣੀ ਭਗਤ ਕਬੀਰ ਜੀ ਸਟੀਕ (2)	65/-
	ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਦਰਪਣ (10 ਭਾਗ)	1800/-
	ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਦਰਪਣ (10 ਭਾਗ) (ਨਵਾਂ ਡੀਲੈਕਸ ਐਡੀਸ਼ਨ)	3000/-